करा सकता है। जो इन क्रियाओं को त्यागता है, वह निश्चित रूप से तमोगुण में कार्य कर रहा है।

**दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत्।**
**स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत्।।८।।**

**दुःखम्**=दुःखरूप; **इति**=ऐसे; **एव**=ही (भाव से); **यत्**=जो; **कर्म**=कार्य; **कायक्लेशभयात्**=देहकष्ट के भय से; **त्यजेत्**=त्यागता है; **सः**=वह; **कृत्वा**=करके भी; **राजसम्**=राजस; **त्यागम्**=त्याग; **न**=नहीं; **एव**=निःसन्देह; **त्यागफलम्**=त्याग के फल को; **लभेत्**=पाता।

### अनुवाद

जो मनुष्य कर्म को दुःखरूप समझ कर शारीरिक क्लेश के भय से त्यागता है, वह राजस त्याग करके भी त्याग के फल को नहीं पाता।।८।।

### तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित पुरुष को इस भयवश धन कमाना नहीं छोड़ देना चाहिए कि उससे सकाम कर्म बन रहा है। कर्म करने से अर्जित धन को कृष्णभावना में लगाया जा सकता है। इसी प्रकार ब्राह्ममुहूर्त में निद्रा-त्याग करने से कृष्णभावना में उन्नति की जा सकती है। अतएव इन कर्मों से यह समझ कर विमुख न हो कि ये सब दुःखरूप हैं, अथवा इसलिए कि इनसे शरीर को क्लेश होगा। ऐसा करना राजस त्याग है। राजस कार्य का सदा दुःखमय फल होता है; इसलिए जो इस भाव से प्रेरित होकर त्याग करता है, वह त्याग के फल को कभी नहीं पाता।

**कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।**
**संगं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः।।९।।**

**कार्यम्**=अवश्य कर्तव्य है; **इति**=इस भाव से; **एव**=निःसन्देह; **यत्**=जो; **कर्म**=कार्य; **नियतम्**=नियत; **क्रियते**=किया जाता है; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **संगम्**=आसक्ति और कर्तापन के अभिमान को; **त्यक्त्वा**=त्याग कर; **फलम् च**=फल को भी; **एव**=निःसन्देह; **सः**=वह; **त्यागः**=त्याग; **सात्त्विकः**=सात्त्विक; **मतः**=माना गया है।

### अनुवाद

परन्तु हे अर्जुन! जो मनुष्य कर्तव्य समझ कर तथा कर्तापन के अभिमान और फल की आसक्ति को पूर्ण रूप से त्याग कर नित्य कर्म करता है, उसका वह त्याग सात्त्विक माना जाता है।।९।।

### तात्पर्य

नियत कर्म को इसी भाव से करना चाहिए। यह आवश्यक है कि कर्ता की कर्मफल में आसक्ति न हो; कर्म के गुणों से असंग हो जाय। किसी फैक्टरी, आदि में काम करते हुए भी कृष्णभावनाभावित पुरुष न कर्म का संग करता है और न अन्य